

( २।० - मीरी लापनु पवित्र करण्यु )

धर्म दूरंधर दशरथ नंदन... पाप पवन प्रागे पाणी .....  
सीतायु ने सिद्धमण शोधे... वनमां शाल्या वनमाणी...  
वसंत वसत्रो रंगे धारी !!

वेशे नपस्वा नृश पधारी !!

वन धरम ने पापन तरवा... यात्रा हीदा पग पाणी...  
सीतायु ने सिद्धमण शोधे... वनमां शाल्या...  
वाल्मीकी रूषी ना शोभने शाल्या !!

दशरथ शोषी धन्य जगाल्या !!

शमे रूषी ने प्रणाम हीदा... शरणांगमां भसात ठाणी...  
सीतायु ने सिद्धमण शोधे... वनमां शाल्या... वनमाणी,  
रूषी रंगे रंगे श्यागन हीदा !!

समृत नृषी वनरूप हीदा !!

गदगद फडे सुनि तरी रथ्या... रामनु रूपन निरुणी...  
सीतायु ने सिद्धमण शोधे... वनमां शाल्या वनमाणी...  
वनवासि ने जजर पडी त्यां !!

दोडी दशरथे शाल्या सेरु त्यां !!

वनवासि ना शमे हीदा... दुजलडा शोधणा राणी...  
सीतायु ने सिद्धमण शोधे... वनमां शाल्या वनमाणी...  
धर्म दूरंधर दशरथ नंदन...

पाप पवन प्रागे पाणी !!

सीतायु ने सिद्धमण शोधे वनमां शाल्या वनमाणी...  

---